B.A Part-2 (Hons.) Paper-3 Topic – Observation Method.
Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt of Psychology,
Vaishali Mahila College Hajipur)

# प्रेक्षण

## (Observation)

प्रेक्षण विधि मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण विधि है। प्रेक्षण शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द 'Observation) का पर्यायवाची है जिसका अर्थ होता है- देखना या अवलोकन करना। इस विधि में अध्ययनकर्ता प्राणी या जीव के व्यवहारों का निष्पक्ष भाव से प्रेक्षण या अवलोकन करते हैं। अपने अवलोकन के आधार पर

एक विशेष रिपोर्ट तैयार करते हैं जिसका विश्लेषण कर वह उस प्राणी के व्यवहार के बारे में निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। प्रेक्षण को वस्तुनिष्ठ बनाने के लिए प्राणी के व्यवहारों का अवलोकन भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में करते हैं। अध्ययनकर्ता प्राणी के दोनों तरह के व्यवहारों जैसे-बाह्य व्यवहार; दौड़ना, खेलना तथा आंतरिक व्यवहार जैसे-रक्तचाप में परिवर्तन, हृदय गति में परिवर्तन आदि का परीक्षण करते हैं।

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रेक्षण को अपने अपने शब्दों में परिभाषित किया गया है-

**गुडे तथा हैट के अनुसार,** "विज्ञान निरीक्षण से प्रारंभ होता है और अपने तथ्यों की पुष्टि के लिए अंत में निरीक्षण का सहारा लेता है।"

**पी.वी. यंग के अनुसार,** "प्रेक्षण नेत्र के माध्यम से किया क्या स्वाभाविक घटनाओं के संबंध में एक ऐसा क्रमबद्ध तथा विचारपूर्वक अध्ययन है जोकि उनके घटित होने के समय पर किया जाता है।

परीक्षण का उद्देश्य विषम सामाजिक घटनाओं, संस्कृति के प्रतिरूपों अथवा मानव व्यवहार के अंतर्गत सार्थक अंतर्संबंधित तत्वों के स्वरूप तथा विस्तार को ज्ञात करना होता है।"

**मोसर के अनुसार,** "निरीक्षण को उचित रूप से वैज्ञानिक पूछताछ की श्रेष्ठ विधि कहा जा सकता है। ठोस अर्थ में निरीक्षण में कानों और वाणी की अपेक्षा नेत्रों का उपयोग होता है।"

उपरोक्त परिभाषा के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि निरीक्षण विधि

में अध्ययन सावधानी से किया जाता है। नेत्रों का पूरी तरह उपयोग होता है। अध्ययन करने वाला प्रत्यक्ष रूप से भाग लेता है। इसके माध्यम से किसी भी अध्ययन की प्राथमिक सामग्री प्राप्त की जा सकती है। साथ ही नियंत्रित निरीक्षण विधि की सहायता से महत्वपूर्ण आंकड़े एकत्र किए जा सकते हैं। जहां सामूहिक व्यवहार के अध्ययन की आवश्यकता होती है, वहां इस विधि का उपयोग बहुधा प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिए किया जाता है, जैसे-अधिगम से संबंधित अध्ययन, प्रत्यक्षीकरण, अभिप्रेरणा,

संवेग, व्यक्तित्व, नेतृत्व, बालकों का सामाजिक विकास और सामूहिक व्यवहार आदि। इसके माध्यम से मनोविज्ञान की विभिन्न समस्याओं को प्राथमिक निरीक्षण के आधार पर चुनते हैं।